शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Vol. 9, Issue 3, pp (97-108), Month: Sep. 2018

प्रव्रजन एवं जीवन पद्धति
(निरन्तरता एवं परिवर्तन के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 श्वेता लोहानी
321, शक्ति नगर, पो0 इंदिरा नगर, थाना गाजीपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश भारत
Email: shwetalohanipandey@gmail.com

सारांश

*प्रव्रजन का तात्पर्य व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का एक निवास स्थान या सॉस्कृतिक क्षेत्र सेदूसरे स्थान को स्थायी या अल्प स्थायी रूप में परिवर्तन से है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य प्रव्रजन के परिणामस्वरूप प्रव्रजकों की जीवनशैली में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है, साथ ही इसी सन्दर्भ में निरन्तरता एवं परिवर्तन के तत्वों को स्पष्ट करना है, जिसका आधार मेरा शोध कार्य ''**प्रव्रजन, आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन**'' है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया। शोध प्रपत्र के मुख्य निष्कर्ष के रूपमें यह प्राप्त किया गया कि प्रव्रजन द्वारा न केवल प्रव्रजकों की जीवन पद्धति परिवर्तित हुई अपितु प्रव्रजन पश्चात् उनकी जीवनशैली के मुख्यतः निम्न पक्षों– आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, उपभोग के प्रतिमानों में स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हुए हैं। जीवन पद्धति में परिवर्तन को प्रव्रजकों के वस्त्राभूषण में आये बदलावों के रूप में भी देखा गया। जहॉ तीज–त्यौहारों को मानने सन्दर्भ में प्रव्रजकों के व्यवहार में निरन्तरता एवं परिवर्तन के प्रतिमान स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं वहीं प्रव्रजन के परिणामस्वरूप प्रवर्जकों में उपभोक्तावादी मानसिकता का भी विकास हुआ है जो उनकी बढ़ती हुई भौतिकतावादी आकांक्षाओं को प्रदर्शित करता है।*

***मुख्य शब्द** – प्रव्रजन, उत्तराखण्डीय प्रव्रजक, जीवनशैली, परम्परागतता, आधुनिकता, निरन्तरता, परिवर्तन*

प्रस्तावना

साहित्य पुनरावलोकनः

प्रव्रजन को एक ऐसी सार्वभौमिक प्रक्रिया मानना अनुचित न होगा जो मानव जीवन के प्रायः सभी पक्षों को प्रभावित करती है। जब व्यक्ति अपने भौगोलिक और सामाजिक पर्यावरण को छोड़ कर एक नवीन भौगोलिक व सामाजिक पर्यावरण में प्रवेश करता है तो उसकी जीवन–पद्धति का प्रभावित होना स्वभाविक है। प्रव्रजन के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने भौगोलिक पर्यावरण को त्याग कर एक नये भौगोलिक–सामाजिक पर्यावरण में अपने मूल सामाजिक

पर्यावरण के साथ प्रवेश करता है। नये भौगोलिक पर्यावरण के साथ एक प्रव्रजक को सामन्जस्य स्थापित करना पड़ता है किन्तु नये सामाजिक पर्यावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित करना इतना सरल नहीं होता क्योंकि उसका मूल सामाजिक पर्यावरण उसके साथ ही इस प्रव्रजित स्थान पर आता है। इसलिए इस सन्दर्भ में नये सामाजिक पर्यावरण के प्रभाव को निरन्तरता एवं परिवर्तन के परिपेक्ष्य में देखना उचित होगा और सामाजिक परिवर्तनों के अध्ययनों में भी निरन्तरता एवं परिवर्तन के परिपेक्ष्य में अध्ययन की एक परम्परा रही है।

गतिशीलता को आधुनिक समाज की प्रायः प्रमुख विशेषता के रूप में देखा जाता है किन्तु यह कोई नवीन घटना नहीं है। प्राचीन काल से ही मानव जाति द्वारा भोजन, सुरक्षा, निवास, आदि कारणों से एक स्थान से दूसरे स्थान को संचरण किया जाता है। बसने के उद्देश्य से लोगों का इस प्रकार का एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर संचरणशीलता को प्रव्रजन की संज्ञा दी जाती है, जिसे एक समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य में देखना रूचिकर होगा। प्रव्रजन की व्याख्या विविध रूपों में की गई है जिसे निम्न द्वारा समझा जा सकता हैः–

न्यू वैब्सटर शब्दकोष[1] द्वारा प्रव्रजन की परिभाषा निम्न प्रकार से दी गई हैः–''एक देश, क्षेत्र अथवा स्थान से दूसरे देश, क्षेत्र अथवा स्थान में बसने के लिए जाने की प्रक्रिया एवं कार्य की खोज में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने की प्रक्रिया।''

पीटरसन[2] के अनुसार,''प्रव्रजन एक ऐसा संचलन है जो जोखिम, आदर्शों की प्राप्ति अथवा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था से पलायन हेतु, जिससे व्यक्ति अलगीकृत हो गया है तथा एक नये अज्ञात घर तथा एक परिचित सामाजिक विश्व से पलायन के जोखिम को उठाने की व्यक्ति की तत्परता से उत्प्रेरित होता है।''

कैनथ कानेयर[3] के अनुसार, ''प्रव्रजन अंशतः स्थायी रूप से व्यक्तियों के समूहों द्वारा एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे भौगोलिक क्षेत्र में किया जाता है, जिसके विषय में पूर्व से ही व्यक्तियों द्वारा मूल्यों के संचरण के आधार पर निर्णय लिया जाता है, जो अन्त में प्रव्रजकों की आपसी अन्तर्क्रिया के रूप में प्रकट होता है।''

एवरेट0 एस0 ली[4] के शब्दों में, ''प्रव्रजन को वृहद रूप में स्थायी व अल्प स्थायी ढंग से आवास को परिवर्तित करने की क्रिया कहा जा सकता है। प्रव्रजन में दूरी गन्तव्य स्थान से तथा क्रिया के ऐच्छिक या अनैच्छिक का कोई बन्धन नहीं होता है साथ में आन्तरिक व बाह्य प्रव्रजन में भी कोई भेद नहीं होता है।''

जीवन पद्धति के अन्तर्गत अनेक परिपेक्ष्य समाहित हैं, जिसमें मानव व्यवहार व क्रिया–कलाप करने के तरीके, धर्म आदि सम्मिलित हैं। जीवन पद्धति की अवधारणा व्यक्ति एवं समाज दोनों सन्दर्भो में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिए समाजशास्त्रियों द्वारा इसे मानव जीवन के सर्वाधिक विशिष्ट भाग– ''संस्कृति'' (culture as a way of life) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके महत्व को इस रूप में भी समझा जा सकता है कि दुर्खीम[5] द्वारा समाजशास्त्र की विषय–वस्तु के रूप में ''व्यक्तियों के सोचने, समझने, व्यवहार एवं महसूस करने के तरीकों के

रूप में (अर्थात् जीवन–पद्धति को) महत्वपूर्ण माना गया जिसे वह ''सामाजिक तथ्य'' के रूप में परिभाषित करता है। इसलिए उसने समाजशास्त्र को सामाजिक तथ्यों (जीवन पद्धति) के अध यन के एक विषय के रूप में माना। यद्यपि दुर्खीम द्वारा ''संस्कृति'' शब्द कर उपयोग नही किया गया है किन्तु जिस ओर वह इंगित कर रहे हैं उसे वास्तव में संस्कृति ही माना जा सकता है। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, बोलने, कार्य करने, भोजन–पद्धति, वास्तु, साहित्य, कला व वस्त्रादि में परिलक्षित होती है। संस्कृति जीवन की विधि है। सरल शब्दों में, संस्कृति उस विधि का प्रतीक है, जिसके आधार पर मनुष्य सोचता व कार्य करता है। कला, संगीत, साहित्य, वास्तुविज्ञान, शिल्पकला, दर्शन धर्म तथा विज्ञान सभी संस्कृति के प्रकट पक्ष हैं तथापि संस्कृति में रीति–रिवाज, परम्पराएँ, पर्व, जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष का दृष्टिकोण आदि सम्मिलित है।

संस्कृति को अनेक ढंग से परिभाषित किया गया है यथा– ऐतिहासिक, दार्शनिक, साहित्यिक, मनोवैज्ञानिक तथा मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण। जीवन पद्धति के सन्दर्भ में संस्कृति की वृहद व्याख्या ई.बी. टायलर[6] द्वारा की गई– ''संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कलाएँ, नैतिकता, विधि, प्रथाएँ और वे सभी योग्यतायें एवं क्षमतायें सम्मिलित हैं जिन्हें समाज के एक सदस्य के रूप में मानव अर्जित करता है।'' संस्कृति हमारे रहन–सहन तथा सोचने–समझने की शैली में, प्रतिदिन की बातचीत में, कला, साहित्य, धर्म, मनोरंजन तथा आमोद–प्रमोद में हमारे स्वभाव की अभिव्यक्ति है।

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य लखनऊ में बसे उत्तराखण्डीय समाज पर प्रव्रजन के प्रभाव को विशेष रूप से, प्रव्रजकों की जीवनशैली के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। इसके विशिष्ट उद्देश्य निम्न हैं:

1. प्रव्रजन के परिणामस्वरूप प्रव्रजकों की जीवनशैली में आये निरन्तरता एवं परिवर्तन के तत्वों का अध्ययन करना।
2. प्रव्रजकों की मानसिकता में आये परिवर्तनों की व्याख्या करना।

शोध अभिकल्पः

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य जीवन पद्धति में प्रव्रजन की भूमिका का विश्लेषण करना है। इस उदेश्य को दृष्टिगत रखते हुए अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्पों का प्रयोग किया गया। अध्ययन मूलतः प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है तथा ऑकड़ों को एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। निर्दश हेतु लखनऊ शहर में कम से कम पिछले एक दशक या अधिक वर्षों से निवास कर रहे उत्तराखण्डीय परिवारों के मुखिया का चयन किया गया तथा निर्दश चयन हेतु ''स्नोबाल'' पद्धति का प्रयोग किया गया।

व्याख्या एवं विश्लेषणः

मानव जीवन सदा से ही परिवर्तनशील रहा है तथा सामाजिक वैज्ञानिकों की मान्यता

है कि प्रव्रजन परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक है जो प्रायः जीवन के सभी पक्षों, जिसमें जीवन पद्धति भी सम्मिलित है, को प्रभावित करता है। जीवन पद्धति पर प्रभाव की विवेचना के अनेक आयाम हो सकते हैं जैसे–सामाजिक–आर्थिक, धार्मिक–सांस्कृतिक आदि। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में इन प्रभावों को विशेष रूप से सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिपेक्ष्यों में विवेचित करने का प्रयास किया गया हैः

मानव समाज एवं उसके सामाजिक जीवन में भाषा का अभूतपूर्व महत्व होता है। भाषा जहाँ संस्कृति की वाहक है वहीं सामाजिक अर्न्तक्रिया में विचारों के आदान प्रदान का माध्यम भी है इसीलिए मातृभाषा को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। परम्परागत समाजों में मातृभाषा एक प्रकार से व्यक्ति की पहचान होती है। प्रव्रजन के पश्चात भी मातृभाषा के मोह को हमारे अधिकांश उत्तरदाता त्याग नहीं सके हैं, जैसा कि निम्नलिखित सारणी प्रदर्शित करती है**:**

सारणी संख्या –1

उत्तरदाताओं की बोली प्रयोग को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र.सं.	बोली	मातृभाषा		कुल	खड़ी बोली		कुल
		आवृत्ति	प्रतिशत्		आवृत्ति	प्रतिशत्	
1.	परिवारजनों से	148	49.33	300 / 100	152	50.67	300 / 100
2.	परिचितों से (उत्तराखण्डीय)	164	54.67	300 / 100	136	45.33	300 / 100

उपरोक्त सारणी उत्तरदाताओं के मध्य विचारों के आदान प्रदान के माध्यम में होने वाले परिवर्तन की ओर इशारा करती है। अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा अपने परिवारजनों से वार्ता हेतु खड़ी बोली का प्रयोग करना उनकी जीवन शैली में आ रहे परिवर्तन की प्रारम्भिक दशा को प्रदर्शित करता है किन्तु यह भी सच है कि प्रव्रजित होने की लम्बी अवधि के पश्चात्भी वे अपनी मातृभाषा से जुड़े हुए है जिसे निरन्तरता एवं परिवर्तन का प्रतीक माना जा सकता है।

जीवन पद्धति में उपभोग के प्रतिमानों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रव्रजन के साथ ही सामान्यतः उपभोग के प्रतिमानों का प्रव्रजकों पर प्रभाव पड़ता है जिससे प्रव्रजकों की जीवन पद्धति में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। अतः मूल स्थान एवं प्रव्रजित स्थान में भोजन पद्धति की तुलना, परिवर्तन को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है निम्नलिखित सारणी इस प्रदर्शित करती है**:**

सारणी संख्या –2

भोजन पद्धति की तुलना को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र.सं.	स्थान	सामूहिक रूप से		कुल	कार्य व समयानुसार		कुल
		आवृत्ति	कुल		आवृत्ति	प्रतिशत्	
1.	मूल स्थान	278	92.67	300 / 100	22	7.33	300 / 100
2.	वर्तमान स्थान	147	49.00	300 / 100	153	51.00	300 / 100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि भोजन पद्धति में सामूहिकता के तत्व का अत्यधिक ह्रास हुआ है। जहाँ मूल स्थान में भोजन करना एक सामूहिक घटना थी (92.67

प्रतिशत्) वहीं वर्तमान स्थान में अधिकांश उत्तरदाताओं (51 प्रतिशत्) में भोजन करना एक प्रकार से वैयक्तिक क्रिया है। अतः यह कहा जा सकता है कि भोजन पद्धति में व्यक्तिवादिता का विकास हुआ है। इस प्रवृत्ति की पुष्टि इस आधार पर भी हो रही है कि भोजन का निर्धारण किस आधार पर होता है, सामूहिक रूचि अथवा वैयक्तिक रूचि से। निम्नलिखित सारणी इस तथ्य को प्रदर्शित करती है:

सारणी संख्या –3

उत्तरदाताओं के परिवारों में भोजन संबंधी वैयक्तिक रूचि पर ध्यान को प्रदर्शित करती सारणी

क्र.सं.	वैयक्तिक	प्रव्रजन पूर्व/मूल स्थान		प्रव्रजन पश्चात/वर्तमान स्थान	
		आवृत्ति	प्रतिशत्	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	हाँ	77	25.67	279	93.00
2.	न्हीं	223	74.33	21	7.00
	कुल	300	100	300	100

उपरोक्त सारणी में यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि प्रव्रजन के पश्चात भोजन में वैयक्तिक रूचि की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है जहाँ प्रव्रजन से पूर्व मात्र 25. 67 प्रतिशत परिवारों में भोजन के सन्दर्भ में वैयक्तिक रूचियों का विशेष ध्यान रखा जाता था वहीं प्रव्रजन पश्चात् इन उत्तरदाताओं का प्रतिशत (93) अत्यधिक बढ़ गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि भोज्य सामग्री सम्बन्धित विषय में भी व्यक्तिवादिता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गयी है किन्तु इससे यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि उत्तरदाताओं में भोजन पूर्ण रूपेन एकल व्यक्ति केन्द्रित घटना है क्योंकि उत्तरदाताओं का अधिकतम प्रतिशत् अपने परम्परागत भोजन के प्रति आसक्ति रखता है, जैसा कि निम्नलिखित सारणी से प्रदर्शित हो रहा हैः

सारणी संख्या –4

उत्तरदाताओं की भोजन सम्बन्धी रूचि को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र0संख्या	रूचि	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	उत्तराखण्डीय भोजन	122	40.67
2.	भारतीय भोजन	108	36.00
3.	पाश्चात्य भोजन	70	23.33
	कुल	**300**	**100**

भोजन पद्धति एवं भोज्य सामग्री में व्यक्तिवादिता के प्रभुत्व के बावजूद उत्तरदाताओं के सर्वाधिक प्रतिशत् (40.67) द्वारा यह स्वीकारना कि उनका परम्परागत उत्तराखण्डीय भोजन ही उनके लिए सर्वाधिक रूचिकर है, उत्तराखण्ड के प्रति उनके लगाव को प्रदर्शित करता है किन्तु इस सन्दर्भ में रूचि के परिपेक्ष्य में परिवर्तन स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है क्योंकि भारतीय एंव पाश्चात्य भोजन के प्रति रूचि रखने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत् (क्रमशः 36 एवं 23.33) सम्मिलित रूप से एक बड़े प्रतिशत् को प्रदर्शित करता है। इसकी पुष्टि इस बात से भी

होती है कि उत्तरदाताओं के परिवार में एक बहुत बड़ा प्रतिशत् अपनी रूचि के अनुसार ही भोजन ग्रहण करता है। जैसा कि निम्नलिखित सारणी से प्रदर्शित होता है:

सारणी संख्या –5

परिवार में उत्तरदाताओं द्वारा भोजन ग्रहण की प्रवषत्ति को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र0संख्या	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	एक ही प्रकार का	85	28.33
2.	अपनी रूचि अनुसार	215	71.67
	कुल	**300**	**100**

71.67 प्रतिशत् उत्तरदाताओं द्वारा परिवार में अपनी रूचि के अनुसार भोजन ग्रहण करने की घटना भोजन सामग्री संबंधित व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति को प्रदर्शित करती है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि भोजन से सम्बन्धित पक्षों में उत्तरदाताओं मे भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियां पाई गई हैं किन्तु सामान्य रूप से यह प्रवृत्तियॉ जीवन पद्धति में आये परिवर्तन की ओर इंगित करती हैं।

भोजन के सन्दर्भ में भोजन करने का स्थान एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। परम्परागत भारतीय समाज में और विशेषकर उत्तराखण्ड में प्रायः रसोईघर में बैठकर ही भोजन करने की परम्परा रही है। उत्तरदाताओं के जीवन में प्रव्रजन के परिणामस्वरूप यह पक्ष भी अछूता नहीं रहा है जैसा कि निम्नलिखित सारणी से प्रदर्शित होता है:

सारणी संख्या –6

उत्तरदाताओं द्वारा भोजन ग्रहण के स्थान को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र.सं.	स्थान	मूल स्थान		वर्तमान स्थान	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	रसोई घर	259	86.33	11	3.67
2.	स्वयं के कक्ष में	3	1.00	81	27.00
3.	डाइनिंग टेबल	38	12.67	208	69.33
	कुल	300	100	300	100

उपरोक्त सारणी में प्रव्रजन के प्रभाव से जीवन पद्धति में उत्पन्न परिवर्तन को स्पष्ट रूपसे देखा जा सकता है। मूल स्थान में जहाँ उत्तरदाताओं का एक बहुत बड़ा प्रतिशत् (86. 33) रसोई में भोजन करता था वहीं वर्तमान में अधिकांश उत्तरदाता (69.33 प्रतिशत) डाइनिंग टेबल पर भोजन करते हैं, जिसे लखनऊ में व्याप्त भोजन करने की पाश्चात्य पद्धति के प्रभाव के रूप में देखा जा सकता है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि व्यवहार के इस क्षेत्र में उत्तरदाताओं पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में वस्त्राभूषणों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान होता है जिसमें होने वाले परिवर्तन व्यक्ति की जीवन पद्धति में परिवर्तन के साथ ही उसमें विकसित होने वाली आधुनिक मानसिकता की ओर भी इंगित करते हैं। वस्त्राभूषण का अधिक सम्बन्ध चूँकि

महिलाओं से होता है इसलिए इस सन्दर्भ में उत्तरदाताओ कीं मानसिकता को देखना रूचिकर होगा, निम्नलिखित सारणी इसे प्रदर्शित करती हैंः

सारणी संख्या –7

परिवार की महिलाओं द्वारा वस्त्राभूषण के प्रकार संबधी मानसिकता के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया को प्रदर्शित करती सारणी :

क्र0संख्या	वस्त्राभूषण	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	परम्परागत उत्तराखण्डीय (घाघरा, पिछौड़ा,नथ, पहुँची आदि)	88	29.33
2.	कोई भी	21	7.00
3.	स्वेच्छानुसार	191	63.67
	कुल	300	100

उपरोक्त सारणी से वस्त्राभूषण धारण करने के प्रति उत्तरदाताओं की आधुनिक मानसिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है केवल 29.33 प्रतिशत् उत्तरदाताओं की यह मानसिकता है कि उनके परिवार की महिलाओं द्वारा परम्परागत उत्तराखण्डीय वस्त्राभूषण धारण किया जाना चाहिए जबकि शेष 70.67 प्रतिशत् उत्तरदाता इस सन्दर्भ में उनकी पूर्ण स्वतन्त्रता के पक्षधर हैं। इसी सन्दर्भ में यह एक रूचिकर पद्धति परिलक्षित हुई है कि विकल्प की पूर्ण स्वतंत्रता के बावजूद उत्तरदाताओं के परिवार की महिलायें परम्परागत वस्त्राभूषण के मोह को त्याग नहीं पायी है, जैसा कि निम्नलिखित सारणी से स्पष्ट होता हैः

सारणी संख्या –8

उत्तरदाताओं के घर की स्त्रियों द्वारा विवाह आदि उत्सवों में पारम्परिक वस्त्रभूषणों के प्रयोग को प्रदर्शित करती सारणीः

क्र.सं.	प्रयोग	सदैव		कभी–कभी		कभी नहीं	
		आवृत्ति	प्रतिशत्	आवृत्ति	प्रतिशत्	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	अपने उत्सवों में	219	73.00	63	21.00	18	6.00
2.	करीबी परिजनों के (उत्सवों में)	102	34.00	165	55.00	33	11.00

जैसा कि उपरोक्त सारणी प्रदर्शित करती है कि अपने घरेलू उत्सवों में 73 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के घर की महिलायें परम्परागत वस्त्राभूषण सदैव धारण करती है मात्र 21 प्रतिशत् कभी-कभी व 6 प्रतिशत् कभी नहीं धारण करती हैं। इस सन्दर्भ में करीबी परिजनों के उत्सवों में परम्परागत वस्त्राभूषण को कभी–कभी धारण करने का प्रतिशत् सर्वाधिक (55) है। इस आधार पर वस्त्राभूषण के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के परिवार की महिलाओं को पूर्णतया परम्परागत्मान लेना अनुचित होगा क्योंकि बहुधा ही स्त्रियां दिखावे के लिए परम्परागत् वस्त्राभूषण धारण करती हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि इस सन्दर्भ में “परम्परागतता एवं आधुनिकता” दोनों ही सम्मिलित हैं।

कुल देवी–देवता की पूजा अर्चना के सन्दर्भ में उनके व्यवहार के प्रतिमान पुनः परम्परागतता के प्रभुत्व को प्रदर्शित करता है। निम्नलिखित सारणी इसे प्रदर्शित करती हैः

सारणी संख्या– 9

उत्तरदाताओं द्वारा कुल देवी देवताओं की पूजा के लिए मूल स्थान जाने की आवषत्ति प्रस्तुत करती सारणी:

क्र0संख्या	आवृत्ति	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	सदैव	95	31.67
2.	कभी–कभी	169	56.33
3.	कभी नहीं	36	12.00
	कुल	300	100

कुल देवी–देवता की पूजा अर्चना के सन्दर्भ में उपरोक्त सारणी उत्तरदाताओं के व्यवहार के पूर्णतया परम्परागत प्रतिमान को प्रदर्शित कर रही है। मात्र 12 प्रतिशत् उत्तरदाता ही कुल देवी–देवताओं की पूजा अर्चना हेतु मूल निवास नहीं जाते हैं, जबकि 31.67 प्रतिशत् उत्तरदाता सदैव जाते हैं शेष 56.33 प्रतिशत् उत्तरदाता बहुधा ही जाते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कुल देवी–देवता की पूजा अर्चना के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के व्यवहार में परम्परागतता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है। आधुनिक समाजों को उपभोक्तावादी समाज भी माना जाता है। इस विषय में दो मत नहीं हो सकते है कि उपभोक्तावादिता बढ़ रही है और हमारे उत्तरदाता इसके अपवाद नहीं हैं निम्नलिखित सारणी इसे प्रदर्शित करती हैः

सारणी संख्या– 10

उत्तरदाताओं की वस्तुओं के उपभोग पर प्रतिक्रिया प्रस्तुत करती सारणी :

क्र0संख्या	प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आवश्यकता पूर्ति का साधन	151	53.00
2.	उपभोग स्वयं एक लक्ष्य	141	47.00
	कुल	300	100

हालांकि अधिकांश उत्तरदाता (53 प्रतिशत्) उपभोग को आवश्यकता पूर्ति का साधन मानते हैं किन्तु 47 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा उपभोग को स्वयं में एक लक्ष्य के रूप में मानना उत्तरदाताओं में उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव को प्रदर्शित करता है साथ ही बढ़ती हुई भौतिकतावादी आकांक्षाओं को प्रदर्शित करता है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि प्रव्रजनके फलस्वरूप उत्तरदाताओं की जीवन पद्धति काफी प्रभावित हुई है और उनकी जीवन पद्धति में उपभोक्तावादी मानसिकताओं एवं मान्यताओं का विकास हुआ है।

प्रव्रजन द्वारा प्रव्रजनों की जीवनशैली प्रभावित होती है किन्तु यह प्रभाव सभी प्रव्रजकों पर सामान रूप से नही पड़ता है अतः प्रव्रजन के प्रभाव को उचित रूप से समझने के लिए यह

आवश्यक हो जाता है कि प्रभाव की गहनता पर भीदृष्टिपात किया जायें निम्नलिखित सारणी इसे दर्शाती हैः

सारणी संख्या –11

प्रव्रजन पश्चात् उत्तरदाताओं की जीवनशैली में आयें अन्तर को प्रदर्शित करती सारणीः

क्रम0संख्या	अन्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अत्यधिक	192	64.00
2.	सामान्य	60	20.00
3.	आंशिक	48	16.00
4.	कोई अन्तर नहीं	0	0
कुल		300	100

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं (64 प्रतिशत्) का यह मानना है कि उनकी जीवनशैली पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है तथा 20 प्रतिशत् सामान्य प्रभाव और 16 प्रतिशत् उत्तरदाता आंशिक प्रभाव को स्वीकारते हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि उत्तरदाताओं की जीवन पद्वति पर प्रव्रजन का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इस सन्दर्भ में यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि उत्तरदाताओं का एक बहुत बड़ा प्रतिशत् इस प्रभाव को सकारात्मक मानता है। निम्नलिखित सारणी यही प्रदर्शित करती हैः

सारणी संख्या –11.1

उत्तरदाताओं की जीवनशैली में आये अन्तर के प्रकार को प्रदर्शित करती सारणीः

क्रम सं0	प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत्
1.	सकारात्मक	291	97.00
2.	नकारात्मक	9	3.00
कुल		300	100

उपरोक्त सारणी से प्रव्रजन के जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव की एक स्वस्थ प्रवृत्ति परिलक्षित हो रही है क्योंकि 97 प्रतिशत् उत्तरदाता इस प्रभाव को सकारात्मक मानते हैं मात्र 3 प्रतिशत् उत्तरदाताओं ने इसके नकारात्मक प्रभाव को स्वीकारा है। इसी निरन्तरता में प्रव्रजन के प्रभाव क्षेत्रों की विवेचना रूचिकर होगी। निम्नलिखित् सारणी इसे प्रदर्शित करती हैः

सारणी संख्या –12

प्रव्रजन पश्चात् उत्तरदाताओं की जीवनशैली में आये अन्तर को वरीयता क्रम में (तीन)प्रस्तुत करती सारणीः

क0 सं0	क्षेत्र	प्रथम वरीयता			द्वितीय वरीयता			तृतीय वरीयता		
		आवृत्ति	अधिमान	प्रतिशत्	आवृत्ति	अधिमान	प्रतिशत्	आवृत्ति	अधिमान	प्रतिशत्
1.	आर्थिक	63	189	21.65	68	136	23.37	24	24	8.25
2.	भाषा	36	108	12.37	44	88	15.12	60	69	20.62
3.	धार्मिक जीवन	0	0	0	5	10	1.72	15	15	5.15
4.	पहनावे	18	54	6.19	32	64	11.00	69	69	23.71
5.	उपभोग के प्रतिमान	69	207	23.71	47	94	16.15	21	21	7.22
6.	घरेलू जीवन	66	198	22.68	44	88	15.12	24	24	8.25
7.	सामाजिक सम्पर्कमें विस्तार	24	72	8.25	23	46	7.90	30	30	10.31
8.	आत्मविश्वास में वृद्धि	15	45	5.15	28	56	9.62	48	48	16.49
	कुल	**291**	**873**	**100**	**291**	**582**	**100**	**291**	**291**	**100**

प्रथम वरीयता के आधार पर सर्वाधिक प्रभाव के क्षेत्रः उपभोग के प्रतिमान, घरेलू जीवन पद्धति एवं आर्थिक क्षेत्र हैं (क्रमशः 23,22 व 21 प्रतिशत्) द्वितीय वरीयता के आधार पर सर्वाधिक प्रभाव का क्षेत्र आर्थिक है (23 प्रतिशत्) और तत्पश्चात् घरेलू जीवन पद्धति एवं भाषा हैं (दोनों ही 15 प्रतिशत्)। प्रभाव के दृष्टिकोण से इसे एक स्वस्थ प्रवृत्ति माना जा सकता है कि उत्तरदाताओं ने इन प्रभावों को सकारात्मक माना है।

निष्कर्ष के रूप मेंप्रव्रजन के परिणामस्वरूप प्रव्रजकों की आदतों का प्रभावित होना स्वाभाविक होता है। हमारे उत्तरदाता भी इसके अपवाद नहीं है। अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा अपने परिवारजनों से वार्ता हेतु खड़ी बोली का प्रयोग करना उनकी जीवन शैली में आ रहे परिवर्तन की प्रारम्भिक दशा को प्रदर्शित करता है किन्तु यह भी सच है कि प्रव्रजित होने की लम्बी अवधि के पश्चात्भी वे अपनी मातृभाषा से जुड़े हुए है, जिसे निरन्तरता एवं परिवर्तन का प्रतीक माना जा सकता है।

उत्तरदाताओं की भोजन पद्धति प्रव्रजन के परिणामस्वरूप प्रव्रजित स्थान की कार्यपद्धतियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित हुई है यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि जहाँ पहले 92.67 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए भोजन परिवार में एक सामूहिक घटना हुआ करती थी वहीं प्रवजन के पश्चात् भोजन पद्धति में सामूहिकता के तत्व में काफी कमी आई है। भोजन एक सामूहिक घटनाक्रम के स्थान पर एक वैयक्तिक घटना अधिक बन गई है क्योंकि उत्तरदाताओं का 51 प्रतिशत् इस बात को स्वीकारता है कि वर्तमान में भोजन कार्य एवं समय, इत्यादि के आधार पर एक वैयक्तिक घटना बन गया है। यही प्रवृत्ति भोजन के सम्बन्ध में सामूहिक/वैयक्तिक रूचियों के सन्दर्भमें भी पायी गयी है। प्रव्रजन से पूर्व परिवारों में भोजन के सन्दर्भ में केवल सामूहिक रूचि का प्रभुत्व होता था। वहीं प्रव्रजन के पश्चात् परिवारों में भोजन

सम्बन्धी वैयक्तिक रूचियों को अधिक महत्व मिलने लगा।

भोजन के सन्दर्भ में अन्य बातें भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जैस–भोजन ग्रहण करने का स्थान। परम्परागत परिवारों में सामान्यतः भोजन रसोई घर में ही किया जाता था किन्तु आधुनिकता के प्रभाव के परिणामस्वरूप भोजन करने का स्थान रसोई से बाहर चला गया है और सामान्यतः भोजन भोजनकक्ष (डाइनिंग रूम) में किया जाता है। हमारे उत्तरदाताओं में परिवर्तन की यह प्रवृत्ति प्रबल रूप में पाई जाती है।जहाँ प्रव्रजन से पूर्व 86.33 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के घरों में भोजन रसोई घर में ही किया जाता था, वहीं आज मात्र 3.67 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के घरों में भोजन रसाई घर में किया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि प्रव्रजनके परिणामस्वरूप भोजन पद्धति अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इसी निरन्तरता में वस्त्राभूषणों पर के प्रभाव की विवेचना भी रूचिकर होगी। वस्त्राभूषणों के सन्दर्भ में यह कहना अनुचित न होगा कि उत्तरदाताओं में परम्परागतता एवं आधुनिकता के मध्य एक निरन्तरता सी परिलक्षित हो रही है। 70.67 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवार की महिलायें वर्तमान में स्वेच्छा से वस्त्राभूषण धारण करती हैं, जो उनके विकल्प चयन की स्वतन्त्रता को प्रदर्शित करता है किन्तु परम्परागत अवसरों पर 73 प्रतिशत् उत्तरदाता के घर की महिलायें आज भी परम्परागत वस्त्राभूषणों को सदैव धारण करती हैं। यह उनकी "आधुनिकता में परम्परागत्ता के तत्वों" को प्रदर्शित करता है। प्रव्रजनके फलस्वरूप उत्तरदाताओं की जीवन पद्धति काफी प्रभावित हुई है और उनकी जीवन पद्धति में उपभोक्तावादी मानसिकताओं एवं मान्यताओं का विकास हुआ है। प्रभाव के क्षेत्र के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं ने यह स्वीकारा कीसर्वाधिकसकारात्मक प्रभाव मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में – आर्थिक, उपभोग के प्रतिमान, घरेलू जीवन–पद्धति पर पड़ा है । अतः यह कहा जा सकता है कि प्रव्रजनके फलस्वरूप उत्तरदाताओं की जीवनशैली में अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, जिसे उत्तरदाता सकारात्मक मानते है और यह प्रभाव आर्थिक, उपभोग के प्रतिमान एवं जीवन पद्धति पर विशेष रूप से पड़ा है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि प्रव्रजनका उत्तरदाताओं की जीवन पद्धति में काफी अधिक प्रभाव पड़ा है, जो अधिकांशतः सकारात्मक है तथा इस प्रभाव के परिणामस्वरूप उनकी जीवनमें आधुनिकता के तत्व समाहित होते जा रहे हैं। जीवन के प्रायः अधिकांश क्षेत्रों में परम्परागत्ताका प्रभुत्व निरन्तर घटता जा रहा है और उत्तरदाताओं की जीवन पद्धति के विभिन्न पक्षों में आधुनिकता के तत्व प्रस्फुटित हो रहे हैं जिसेआधुनिकता की ओर गतिशीलता के रूप में देखा जा सकता है किन्तु प्रपत्र में यह भी स्पष्ट होता है कि प्रव्रजकों के जीवन में परम्परागत्ता के तत्व समाप्त नहीं हुए हैं क्योंकि कहीं–कहीं परम्परा भी आधुनिकता का रूप धारण करती दृष्टिगत हो रही है। जो अमेरिका की उस क्रान्ति की याद दिखाते है जो श्यामवर्ण के पक्ष में हुई थी और जिसका मुख्य नारा ''श्याम ही सुन्दर है''(Black is beautiful) वैसे भी आधुनिकता की इस दौड़ में आजकल यह प्रवृत्ति भी परिलक्षित हो रही है कि पुरातन भी vk/kqfud rk d k Lo: i (Antique is new Modernity) धारण करता जा रहा है।

सन्दर्भ

1. Webster's Third New International Dictionary, G&C, Marianne Company,

Massachusetts, 1966, vol II, p. **1232.**

2. W.Peterson, "*A General Typology of Migration*,"A.S.R, June 1958, vol.23, p. **256.**
3. Kenneth C. W. Kaneyer(ed), "*Population Studies: Selected Essays and Resarch*," Rand Menally College Publishing Company, Chicago, 1995, p**.175.**
4. Everett. S. Lee, "A Theory of Migration in Kenneth C. W. Kaneyer(ed), "*Population Studies Selected Essays and Resarch*," Rand Menally College Publishing Company, Chicago, 1975, p. **191.**
5. Emile Durkheim, "*Preface to the Second edition*",The Rules of Sociological Method (New York, Free Press ,1964),p.**102.**
6. EdwardB.Tylor, "*Primitive Culture*", London,Murray, 1871.